सम्पादकीय

इतिहास बोलता है

इतिहास का शाब्दिक अर्थ है– ऐसा हुआ था. लेकिन इतिहास सिर्फ हुए का विवरण ही नहीं है– यह उस सबका लेखा-जोखा है जिसे हम अपना अतीत कहते हैं, और सचाई यह भी है कि हमारा वर्तमान इस अतीत से असंपृक्त हो ही नहीं सकता. जो बीत चुका, जो बीत रहा है और जो बीतेगा, वह सब नदी की धारा है. अनवरत बहती धारा. इस अनवरत बहती धारा का सत्य और सार्थकता बीते हुए कल, आज, और आने वाले कल के एक-दूसरे से जुड़े होने में ही है. यह सब मिलकर ही एक पूरा इतिहास बनते हैं. इसलिए ज़रूरी है बीते हुए कल को न तो सिर्फ 'ऐसा हुआ था' समझकर भुला दिया जाये और न ही उसे व्यक्तियों और घटनाओं की सूची मात्र समझा जाये.

आज इतिहास की सामान्य समझ व्यक्तियों तक ही नहीं, राजाओं-महाराजाओं तक सीमित होकर रह गयी है. लेकिन सच यह है कि इतिहास शासकों की कहानी मात्र नहीं होता. घटनाएं, पात्र, नायक आदि महत्वपूर्ण होते हैं, उनके माध्यम से उनके समय को भी समझा जा सकता है– पर अंशत: ही. इतिहास की पूरी समझ तब बनती है जब हम इतिहास को विचार में पढ़ें. प्राचीन ग्रंथ, महान विचारकों की समझ, ऋषियों की तपस्या के परिणाम और साहित्य, संस्कृति, कलाओं आदि में भी इतिहास बोलता है. इस वाणी को सुनने-समझने की ज़रूरत है. तभी हमारे आज पर बीते हुए कल के प्रभाव का सम्यक आकलन हो सकता है और तभी हम इतिहास रचने का सही अर्थ समझ सकते हैं. इतिहास को समझना है तो मनीषियों के विचारों को समझना होगा, उन मूल्यों-आदर्शों को समझना होगा जो व्यक्ति के आचरण को प्रभावित-परिभाषित करते हैं. इतिहास सिर्फ शासक नहीं रचते,

शासित भी इतिहास का हिस्सा हैं– वे भी रचते हैं इतिहास. इसलिए इतिहास को पूर्णता में समझने का मतलब इन सारे तत्वों-तथ्यों को समझने की कोशिश होती है.

साहित्य इस कोशिश का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है. सच तो यह है कि साहित्य जीवन लिखता है. इतिहास को यदि हम जीवनियों का एक गट्ठर मान लें तो साहित्य वह रस्सी है जो इस गट्ठर को, एक तरह से, संभालकर रखती है. एक आकार देती है उसे. साहित्य उन खाली जगहों को भरता है, जो इतिहास-कथा की समझ को बाधित करती हैं. इस दृष्टि से देखें तो यह भी कह सकते हैं कि साहित्य इतिहास का अतिक्रमण करता है. जो हो चुका उसे ही नहीं, उसके औचित्य-अनौचित्य को भी समझने की राह सुझाता है साहित्य. कुछ ही अर्सा पहले फिल्म पद्मावती को लेकर देश में एक आंदोलन-सा खड़ा हो गया था. उसके कारण भले ही कुछ भी रहे हों, पर यह एक हकीकत है कि 'पद्मावती' के विवाद को 'पद्मावत' ने सुलझाया था. पद्मावती इतिहास का सच है, पद्मावत साहित्य का. एक जानकारी देता है, दूसरा समझ. इस समझ से सार्थक बनती है जानकारी.

जिस तरह की स्थितियां आज हमने अपने देश, अपने समाज में पैदा कर दी हैं; जिस तरह इतिहास के नाम पर विवादों को पालने-पोसने में लगे हैं हम; जिस तरह अतीत की भूलों को ठीक करने के नाम पर हम भविष्य के लिए नयी भूलों के गट्ठर बनाने में लगे हैं, उसे देखते हुए ज़रूरी हो गया है कि इतिहास को सही परिप्रेक्ष्य और सही संदर्भों में समझने की पहल हो. इतिहास हमारे पांवों की बेड़ी नहीं, हमारी आंखों का चश्मा बनना चाहिए– साफ-साफ देखने के लिए, दूर तक देखने के लिए. तभी हम इतिहास की भूलों को दुहरायेंगे नहीं, उनसे कुछ सीखेंगे.